ओम् शान्ति 25-8-13 मधुबन

प्राणेश्वर प्यारे अव्यक्त बापदादा और दादियों के अति स्नेही सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आज हम सबकी अति प्यारी, मीठी मीठी दादी प्रकाशमणि जी का छठा स्मृति दिवस है। दादी जी की अलौकिक पालना बाबा के अधिकतर बच्चों ने साकार में ली है। आज के दिन उनकी मीठी मुस्कराती सूरत, रूहानियत से सम्पन्न मूर्त सबके सामने आ जाती है। मुरली क्लास में दादी जानकी जी ने दादी की विशेषतायें सुनाते हुए बहुत अच्छी प्रेरणायें दी। मुरली के बाद सभी मुख्य दादियाँ, बड़ी बहिनें और बड़े भाईयों ने प्रकाश-स्तम्भ पर जाकर अपने स्नेह सुमन अर्पित किये। फिर भट्ठी के निमित्त आये हुए भाई बहिनें नम्बरवार प्रकाशस्तम्भ की परिक्रमा देते आगे बढ़ते रहे। (10 हजार भाई बहिनें युगलों की भट्ठी में आये हुए हैं) कुछ मुख्य भाई बहिनें दादी जी के कमरे में गये, जहाँ थोड़े शब्दों में दादी जी द्वारा आज के दिन प्राप्त प्रेरणायें कुछ दादियों वा बड़े भाईयों ने सुनाई। दादी गुल्जार ने कहा कि आज दादी प्रेरणा दे रही है कि सभी सन्तुष्ट रहना और सबको सन्तुष्ट करना। दादी जानकी जी ने कहा कि दादी ने जैसे सबको एकता के सूत्र में बांधा, इतने बड़े संगठन को एकमत बनाया और सबको स्नेह की पालना दी, अब हम सबको उसका रिटर्न करना है। दादी रतनमोहिनी जी, मोहिनी बहन, मुन्नी बहन तथा बड़े भाईयों ने भी अपने-अपने अनुभव व्यक्त किये। फिर दादी जी के अंग संग के अनुभव क्लास में निर्वैर भाई जी ने सुनाये। फिर गुल्जार दादी ने दादी जी के निमित्त बापदादा को भोग स्वीकार कराया। दादी जी कुछ समय के लिए सभी से मिलन मुलाकात करने के लिए सभा के बीच में पधारी और बहुत प्यार से खड़े होकर पूरी सभा को स्नेह भरी दृष्टि दी। बाद में अपने मधुर महावाक्य उच्चारण करते हुए कहा कि

अभी आप सभी के मन्सा सेवा की आवश्यकता है। मन्सा सेवा हर एक कर सकता है। चाहे बीमार हो, चाहे कोई भी कारण हो लेकिन मन्सा सेवा से जो वायुमण्डल बहुत गंदा हो रहा है, चारों ओर गंद ही गंद है, उसको मिटाने के लिए वाचा सेवा तो करते हो लेकिन अभी मन्सा सेवा से आत्माओं की मन्सा को चेंज करो। भाषण सुनते हैं, उसका भी प्रभाव पड़ता है लेकिन स्वयं मन्सा सेवा द्वारा परिवर्तन हो जाये। जो इतनी गंदगी अति में जा रही है क्योंकि अति में तो इसीलिए जा रही है क्योंकि अति के बाद अन्त तो होना ही है लेकिन आप सिर्फ भाषण से नहीं मन्सा सेवा से भी मन्सा को परिवर्तन करो क्योंकि अभी मन्सा सभी की गंदगी की होती जा रही है।

मन्सा सेवा के लिए सहज विधि क्या हो?

खुद को पहले मैं शक्तिशाली आत्मा हूँ, मन में यह अनुभव करो। बापदादा से मन का कनेक्शन जोड़ो और बापदादा से मन के कनेक्शन से सर्व शक्तियां अपने मन में धारण करो। आप लोगों की खुद की मन्सा भले विपरीत नहीं है, लेकिन फालतू है। फालतू टाइम, फालतू संकल्प, फालतू बोल यह चलता है, वह फालतू अभी खत्म होना चाहिए। आपका पहले खत्म होगा तो वायब्रेशन फैलेगा।

एडवांस पार्टी का अभी क्या रोल है भविष्य में क्या होगा .....?

हम सभी पहले अमृतवेले मैजारिटी बाबा के पास मिलने जाते हैं, और बाबा हम सबको क्योंकि विशेष आत्मायें हैं, जो भी सब विशेष आत्मायें सर्विसएबुल हैं, उन सभी को सम्मुख में योग तपस्या नहीं, मन्सा सेवा की

ड्रिल सिखाता है। चाहे हमारा जन्म हो गया है लेकिन हम संगम के समय से और संगम के शरीर से वहाँ इमर्ज होते हैं इसीलिए हम लोगों को बाबा मन्सा सेवा का वायब्रेशन फैलाओ, देश-विदेश का चक्र लगवाते हैं। कभी कहाँ का, कभी कहाँ का, मन्सा सेवा का अभ्यास कराके, विश्व की सेवा कराते हैं। कभी इन्डिया, कभी विदेश दोनों तरफ मन्सा सेवा का अभ्यास कराते हैं और उन्हों की बुद्धियों को, बुद्धिवान की बुद्धि है बाबा। तो बुद्धिवान बाबा उनकी बुद्धियों को मन्सा द्वारा टच करते हैं। आप कौन है!

दादी आप देश में हो या विदेश में हो? देश में हैं। देखो, विदेश जो है, वह दूर से कैच करने में होशियार हैं। इन्डिया नहीं है, इन्डिया की मोटी बुद्धि है। **(दादी जानकी ने कहा आपने हमें तो विदेश सेवा में भेज दिया)** लेकिन इन्डिया वालों को ही निमित्त बनना है, फारेन वाले हैं लेकिन इन्डिया वाले ज्यादा हैं।

अभी मन के व्यर्थ संकल्प जो हैं, उसको खत्म करने का अटेन्शन चाहिए क्योंकि देखा यह है कि खराब संकल्प इतना नहीं चलते हैं लेकिन व्यर्थ काफी चलते हैं। जो काम नहीं होगा ना उसके भी चलेंगे। खराब नहीं होंगे लेकिन हैं व्यर्थ इसीलिए मन्सा सेवा से पहले व्यर्थ को खत्म करो। मन को बिजी रखने का अपना-अपना प्लैन बनाओ। जहाँ भी आपका मन जिस सबजेक्ट में लगता हो, उससे मन्सा सेवा करो।

यज्ञ के भविष्य का चित्र कैसा होगा?

यज्ञ में एकानामी और एकनामी, योग का वायब्रेशन ज्यादा चाहिए। और एकॉनामी के ऊपर अभी अटेन्शन चाहिए। बहुत फ्री हो गये हैं, फालतू खर्चे। हमारे होते इतना व्यर्थ खर्चा नहीं था लेकिन अभी दिनप्रतिदिन व्यर्थ खर्चे बहुत बढ़ रहे हैं, उसके ऊपर अटेन्शन, अटेन्शन, अटेन्शन। क्योंकि मंहगाई तो बढ़नी ही है, जब महंगाई बढ़नी है तो उसका ध्यान रखना आवश्यक है। यह नहीं चार्ज वाले करते हैं, यह करते, यह करते इसमें नहीं जाओ, मैं क्या करता हूँ!

आपके इस दिवस के निमित्त 150 मेहमान भी आये हैं, उनके लिए विशेष कोई सन्देश?

बापदादा खुश है कि आप सब युगल रूप से पहुंचे हो। अभी मन्सा सेवा बढ़ाना। (नयों के लिए) उन्हों के लिए योगशिविर रखी है ना, उन्हें योग के अनुभव कराओ। ऐसे नहीं योग में बैठे हैं लेकिन अनुभव क्या हुआ। जितना अनुभव होगा, उतना स्वयं ही इन्ट्रेस्ट बढ़ेगा।

अभी यज्ञ को बढ़ाने के लिए क्या करना है? बहुत आवश्यकता है, बहुत बहुत बहुत आवश्यकता है तो बनाओ। पर जो कहे वह बनाओ, वह नहीं।

दिल्ली गवर्मेन्ट को हम जगाते रहते हैं लेकिन वह जागते नहीं हैं उसके लिए हम क्या करें?

योग शिविर के ऊपर अट्रैक्शन करो। योग में अनुभव होना सम्भव है, इसीलिए जितना योग से अनुभव करेंगे, सिर्फ बैठे नहीं लेकिन अनुभव कैसे करें ऐसी कामेन्ट्री बनाके हल्की, ज्यादा भारी भी नहीं, सिम्पुल बनाके कामेन्ट्री करो और अनुभव कराओ। जब तक अनुभव नहीं करते हैं तब तक रेग्युलर नहीं बनते हैं। रेग्युलर बनाओ।

विदेश के लिए दादी की क्या प्रेरणा है?

विदेश में सेवा का शौक अभी बढ़ रहा है, सबका यह संकल्प है कि कुछ करना है लेकिन उनको पर्सनल एक एक देश में क्या हो सकता है, क्या कर सकते हैं, देश के वायुमण्डल अनुसार वह थोड़ा अटेन्शन खिंचवाओ। जनरल में यह करना है, नहीं। हर एक देश की सरकमस्टांश और हालतें अपनी-अपनी हैं इसलिए जो बड़े देश हैं, उनको सामने रख उनकी प्राब्लम पहले चेक करो, फिर उनको प्रोग्राम दो। जनरल टॉपिक जो

रखते हैं, जनरल वह नहीं। कहाँ एकानामी चाहिए, कहाँ खुशी चाहिए, कहाँ वेस्ट को सेफ करना चाहिए, हर एक एरिया को समझकर प्रोग्राम करो।

जैसे बाबा का दस बार आना होता है तो दादी का भी आना जाना हो सकता है? नहीं। लूज़ नहीं करो। बापदादा और बापदादा द्वारा जो डायरेक्शन मिलते हैं, उसी पर चलो।

सभी खुश रहते हो, हाथ उठाओ। कोई भी बात आवे खुशी नहीं जावे। चलो थोड़ा सीरियस हो जाना, वह भी ठीक नहीं। लेकिन कभी कभी जब हो जाते हैं ना तो कहते हैं कुछ सोच रहा हूँ! लेकिन क्या सोच रहे हैं। जो बातें हुई उनको ही सोच रहे हो या बातों का हल सोच रहे हो? कई बातों को ही सोचते रहते हैं, यह हुआ यह हुआ। लेकिन करें क्या, संगठन को कैसे मजबूत बनायें। कोई हैं जो खुद के लिए सोचते रहते हैं लेकिन संगठन को, क्लास को एक उमंग में उठावें वह कम हैं। दुनिया में अभी बुराईयां बढ़ती जा रही हैं, ऐसे टाइम में आप लोगों को खुशी में रहने की कोई न कोई बातें निकालनी चाहिए। जैसे मानों आप योग शिविर रखते हो, उसमे थोड़े टाइम के लिए शान्ति का अनुभव करते हैं। ऐसे अनुभव कराओ।

संगमयुग 100 साल का, अभी 23 साल उसमें बाकी है, उसके बाद परिवर्तन की रूपरेखा क्या होगी?

यह अति में जाना, यह अति ही अन्त लायेगा। सब तंग हो जायेंगे, क्या हो रहा है, क्या हो रहा है...। हल दिखाई नहीं देगा फिर सोचेंगे कहाँ जायें। कोई सहज साधन चाहिए। सहज साधन ढूढंते आप लोगों के पास आयेंगे और आप लोग मन्सा सेवा का कंगन बांधो। राखी बांधी है ना। तो यह राखी जो है वह मन्सा सेवा का बंधन है।

जयन्ती बहन से:- हर एक बड़े देश जो हैं, वहाँ चक्र लगाके मन्सा सेवा के कोर्स कराके उन्हों में आदत डालके आओ। आप जाओ या कोई भी जाये, लेकिन मन्सा सेवा क्या है, उस पर अटेन्शन दिलाओ। अपने-अपने क्लासेज़ में भी मन्सा सेवा का अभ्यास कराओ। व्यर्थ संकल्प अभी बहुत बढ़ गये हैं क्योंकि मन फ्री है और मन को बिजी रखने का तरीका नहीं आता है, लोग समझते हैं कुछ मिले, कुछ मिले। तो जैसे कामेन्ट्री कराके योग कराते हो, ऐसे यह भी कराओ। उसी रीति से यह अनुभव कराओ। मन बिजी हो, नहीं तो व्यर्थ बहुत चलता है। (फिर दादी ने अपने हाथों से टोली खिलाई, यज्ञ का ब्रह्माभोजन खाया और सभी से विदाई ली)

फिर दादी गुल्जार वतन से वापस आई और बापदादा का जो मधुर सन्देश सुनाया वह इस प्रकार है:

ओम् शान्ति। आज तो बाबा ने कहा, दादी का दिन है ना आज तो दादी को खूब बहलाओ। जो भी टाइम है ना, आज दादी का है। तो आप सभी ने दादी से मुलाकात की? और दादी क्या चाहती है? (मन्सा सेवा करो) क्योंकि मन्सा सभी की बहुत खराब हो रही है ना। तो मन्सा सेवा करने से आपकी मन्सा पावरफुल का वायब्रेशन उन्हों की मन्सा में भी जायेगा। हमारा राज्य स्थापन होना है ना! तो हमारे राज्य में तो मन्सा बहुत पावरफुल है। तो बाबा ने कहा आज मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा। आज दादी का दिन है। तो आप सभी ने दादी से मनाया। हाथ उठाओ। (खूब मनाया)

कहते भी हैं दादी का दिन है। तो बाबा ने भी कहा दादी का दिन है। दादी कहती है, मेरा जन्म तो हो गया लेकिन रोज़ अमृतवेले हम सर्विसएबुल ग्रुप बाबा के पास जाते हैं। 4 बजे रोज़ जाते हैं, मुख्य जो भी निमित्त हैं वह सब वहाँ इकट्ठे होते हैं और बाबा कोई न कोई कार्य हम लोगों को देता है। अभी यह करो, अभी यह करो और हम सब मिल करके आपस में इकट्ठे होके प्लैन बनाते हैं और फिर बाबा को रिजल्ट सुनाते हैं। कभी बाबा

कहते हैं, भ्रष्टाचार के ऊपर अटेन्शन दो, कभी बाबा कहता है यह बिल्कुल अशान्ति फैलती रहती है, उसके ऊपर कर्मेन्द्रियों के विजय के ऊपर अटेन्श्न दो। कभी क्या कहता, कभी क्या कहता। तो हम उसमें बिजी रहते हैं। 12-14 का ग्रुप है वह सभी इकट्ठे होते हैं और बाबा जो होमवर्क देते हैं, वह हम करते हैं। भले हम अभी छोटे हैं लेकिन हमारी आत्मा में तो संस्कार हैं। वह होमवर्क जो बाबा देता है, वह कोई न कोई टाइम निकालके करते हैं। सोते हैं, नहाने जाते हैं, तो माँ बाप को तो पता नहीं पड़ता है। ऐसे टाइम पर हम टाइम निकालते हैं जो उन्हों को पता भी नहीं पड़ता है कि यह क्या करते हैं! अगर कुछ पूछते हैं तो उनको हाँ में हाँ कर देते हैं। लेकिन वह अच्छे हैं, ऐसे टोकने वाले नहीं हैं। वह भक्त हैं लेकिन पहले नम्बर के भक्त नहीं हैं। (आज सण्डे है इसलिए दादी यहाँ बहुत समय रही)

मतलब दादी को मधुबन बहुत याद है। आप दादी को बहुत याद करते हैं। जानकी दादी कहती है, एडीशन करती है। एकता होनी चाहिए। एक ने कहा दूसरे ने किया, इसको कहते हैं एकता। जहाँ एकता है, एक की याद है, वहाँ सफलता हुई पड़ी है। तो क्या करेंगे? दादी ने कहा मन्सा सेवा। मन्सा सेवा के ऊपर अटेन्श्न दो और यह दादी (जानकी) कहती है, एकता के ऊपर अटेन्शन दो। (दादी जानकी ने कहा - आप सदा मेरा साथ देती हो, यह हमारा जो स्नेह है वह औरों को खींचेंगा)

अभी हर मास इसकी रिपोर्ट अपनी टीचर को देना कि क्या किया, एक ने कहा दूसरे ने माना। एक दो के विचारों को समझके एक दो को साथ देना। बाबा ने बहुत बहुत याद प्यार दिया और बाबा ने कहा जो आज दादी ने कहा, वह करना ही है। तभी दादी को रिपोर्ट देंगे, सेन्टर्स से रिपोर्ट आयेगी और दादी को देंगे। अच्छा। ओम् शान्ति।